PART-**1**

अरब भूगोलवेत्ता- इब्नबतूता

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

अरब भूगोलवेत्ता (Arab Geographers)

अनेक अरब लेखकों और विद्वानों ने भूगोल के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उनमें से कुछ प्रमुख विद्वानों के योगदान की संक्षिप्त चर्चा यहाँ की जा रही है।

(5) इब्नबतूता (Ibn Battuta)

इब्नबतूता (1304 1377 ई०) का जन्म उत्तरी आफ्रीका के टेंजियर्स नगर में एक मुस्लिम न्यायाधीश (काजी) परिवार में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय में हुई थी। उनमें भ्रमण और विश्व के विषय में अधिक से अधिक जानने की इच्छा बचपन से ही थी। वे अध्ययन के अध्ययन से मिस्र, सीरिया और हेजाज में कई तर्षों तक रहे और वहाँ के प्रमुख सूफिसों (संतों) और विद्वानों से मिले । उन्होने तीर्थयात्रा के उद्देश्य से 2। वर्ष की आयु में मक्का की हजयात्रा की थी। हजयात्रा के पश्चात् उन्होंने मिस्र, सीरिया, मेसोपोटामिया (इराक), अरब, फारस एशिया माइनर, मध्य एशिया कुस्तुनतुनिया, बुखारा, भारत, लंका, मालदीव, सुमात्रा, इथोपिया, चीन आदि प्रदेशों की सफलतापूर्वक यात्राए की थी।

इब्नबतूता ने अफ्रीका के पूर्वी तट के सहारे दक्षिण की ओर समुद्री मार्ग से भूमध्य रेखा से 10° दक्षिण में स्थित किलवा स्थान तक यात्रा की थी। पश्चिमी एशिया से अनादतूलिया, कुस्तुनतुनिया, कीव (मध्य एशिया), बुखारा, समरकन्द और अफगानिस्तान होते हुए हिन्दूकुश पर्वत के दर्रे से होकर 1333 ई० में इब्नबतूता भारत पहुँचे थे । भारत में तत्कालीन बादशाह मोहम्मद बिन तुगलक ने उन्हें काजी न्यायाधीश के रूप में नियुक्त कर लिया। इस प्रकार वे भारत में 8 वर्ष तक रहे और भारत की विस्तृत यात्राएं की। भारत से वे मालदीव, श्रीलंका, मलाया होते हुए समुद्री मार्ग से चीन के कैन्टन नगर गये थे और वहाँ से पुनः मोरको वापस चले आये थे। यह यात्रा लगभग 30 वर्ष में पूरी हुई थी। कुछ वर्षों बाद उन्होंने सहारा को पार करके नाइजर के तट पर स्थित टिम्बकटू तक की यात्रा किया था। इस प्रकार उनका अधिकांश जीवन यात्राओं में ही बीता था।

इब्नबतूता ने अपनी यात्राओं के अनुभवों तथा विभिन्न स्थानों, नगरों, प्रदेशों आदि की विशेषताओं, इमारतों आदि का विस्तृत वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। उन्होंने 'रिहलाह' (Rihlah) नामक पुस्तक लिखी थी जिसमें अनेक इस्लामिक (मुस्लिम) देशों की मिट्टियों, कृषि अर्थव्यवस्था, राजनीतिक इतिहास आदि का वर्णन किया गया है। वास्तव में वे एक भ्रमणशील भूगोलवेत्ता थे

जिनका उद्देश्य विश्व के विभिन्न स्थानों और देशों की यात्रा करना और वहाँ के प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनीतिक दशाओं से परिचित होना और उनका वर्णन करना था।